मूल्य – 5 रु.

'तृप्ति योजना' के अन्तर्गत प्रत्येक बुजुर्ग को 1500/– मूल्य की खाद्य-सामग्री सहायता प्रतिमाह वितरित की जाती है।

Tara
बुजुर्गों के लिए...

तारांशु

मासिक

जून, 2015

वर्ष 3, अंक 9, पृ.सं. 20

आनन्द वृद्धाश्रम :-

वृद्धाश्रमवासी प्रात:काल गुलाब-बाग में भ्रमण करते हुए

एक वृद्ध सहयोग राशि रु. 5000/- प्रति माह

ताजी हवा में व्यायाम का आनन्द

योग दूर भगाए रोग

आप भी यदि किसी असहाय बुजुर्ग बन्धु के लिए 'आनन्द वृद्धाश्रम' में आवास की मानवीय सुविधा उपलब्ध करवाने की सेवा भावना रखते हैं, तो कृपया प्रति बुजुर्ग 5000 रु. प्रतिमाह की दर से अपना दान सहयोग 'तारा संस्थान' को प्रेषित करने की कृपा करें।
01 माह - 5000 रु., 03 माह - 15000 रु., 06 माह - 30000 रु., 01 वर्ष - 60000 रु.

वृद्धाश्रम आवासियों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता है। उनके लिए वृद्धाश्रम की सभी सेवाएँ सुविधाएँ - भोजन, वस्त्र, आवास, चिकित्सा देखभाल आदि, सर्वथा नि:शुल्क हैं।

आशीर्वाद
डॉ. कैलाश 'मानव'
संस्थापक एवं प्रबन्ध न्यासी,
नारायण सेवा संस्थान (ट्रस्ट), उदयपुर

आभार
श्री एन.पी. भार्गव
मुख्य संरक्षक, तारा संस्थान,
उद्योगपति एवं समाजसेवी, दिल्ली

श्रीमती शमा - श्री रमेश सचदेवा
संरक्षक,
उद्योगपति एवं समाजसेवी, दिल्ली

श्री सत्यभूषण जैन
संरक्षक,
प्रमुख समाजसेवी, दिल्ली

प्रकाशक एवं सम्पादक
कल्पना गोयल

दिग्दर्शक
दीपेश मित्तल

कार्यकारी सम्पादक
तखत सिंह राव

ले-आउट व ग्राफिक डिजाइनर
गौरव अग्रवाल

संयोजन सहायक
जगदीश मुण्डानिया

अनुक्रमणिका

विषय		पृष्ठ संख्या
आनन्द वृद्धाश्रम गतिविधियाँ	-	02
अनुक्रमणिका	-	03
साथ जन्मों का....	-	04
तीन सखियाँ...	-	05
हमारे सेवा प्रकल्प : गौरी योजना	-	06
हमारे सेवा प्रकल्प : तृप्ति योजना	-	07
साथी हाथ बढ़ाना...	-	08
प्रेरक वचन / मील के पत्थर	-	09
प्रेरक प्रसंग	-	10
स्वास्थ्य	-	11
बेटी बचाओ / प्रेरणा	-	12
मासिक अपडेट्स : मोतियाबिन्द जाँच शिविर	-	13-15
स्वागत	-	16
धन्यवाद	-	17-18
सम्पर्क सूत्र - तारा संस्थान	-	19

आशीर्वाद - डॉ. कैलाश 'मानव', संस्थापक - नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

श्रीमती कल्पना गोयल अपनी पूज्य माता एवं पूज्य पिता डॉ. कैलाश 'मानव' की सन्निधि में,

'तारांषु' – स्वत्वाधिकारी, श्रीमती कल्पना गोयल द्वारा 240–ए, हिरण मगरी, सेक्टर – 6, उदयपुर (राज.) 313002 से प्रकाषित तथा मुद्रक श्री सत्यप्रकाष कुमार शर्मा द्वारा सागर ऑफसेट प्रिन्टर, इण्डिया प्रा. लि. प्लॉट नं. 518, इकोटेच – III, उद्योग केन्द्र एक्टेंषन – II, ग्रेटर नोएडा, गौतम बुद्ध नगर (उत्तर प्रदेष) में मुद्रित, सम्पादक – श्रीमती कल्पना गोयल

साथ जन्मों का...

तारा संस्थान में कार्य करते हुए बहुत सारे खुबसुरत लोगों से मिलना होता है, खुबसूरती चेहरे या शरीर से नहीं, मन से... जिनका मन सुन्दर होता है वे चाहे कैसे भी दिखने में हो कितनी भी उम्र के हो जाए उनकी खुबसूरती कभी समाप्त नहीं होती उनका आकर्षण ताउम्र बना रहता है.... बहुत से सुंदर लोगों से मिलना तारा में होता है और सामान्य जन से ज्यादा सौभाग्यशाली हम हैं कि हमारा मिलना अच्छे दिल वाले लोगों से होता है..... जो भी अच्छे काम में सहायोग करते हैं वे निश्चित ही एक बेहद अच्छे दिल के मालिक होते हैं तभी उनका दिल असहाय लोागों के लिए धड़कता हैं।

ऐसे ही एक खुबसूरत जोड़ी है श्रीमती उर्मिला जी माहेश्वरी और श्री गिरीश चंद्र जी माहेश्वरी। आप दोनों कासगंज उत्तर प्रदेश के रहने वाले हैं। दोनो की ही उम्र 70 के आसपास है। उर्मिला जी हिंदी की लेक्चरार रहीं और श्री गिरीश जी Lumex Group में स्टोर मैनेजर रहे थे...... इनके दो बेटियाँ व एक बेटा है। आप दोनों नारायण सेवा संस्थान व तारा संस्थान से पिछले कई वर्षो से जुडे हैं। कुछ माह पहले आप दोनों तारा संस्थान में पधारे व डोनेशन तो दिया ही साथ में इच्छा व्यक्त की कि कुछ दिन वृद्धाश्रम के आवासियों के साथ रहेगें। और इन्ही दिनों आप दोनों को नजदीक से जानने का अवसर प्राप्त हुआ। पति–पत्नि का रिश्ता कितना सुंदर हो सकता है इसकी आप दोनो मिसाल है। 2003 में उर्मिला आंटी रिटायर हुई तभी उन्हें Paralysis हो गया था और उस अवस्था में उनकी सेवा और संपूर्ण देखरेख गिरीश अंकल ने ही की थी।

Paralysis से उबर गई तो उनके घुटनों में समस्या हो गई, उनसे ढंग से चला भी नहीं जाता था तो अंकल ने उनके घुटनों का भी ऑपरेशन करवाया और इस दौरान भी उनकी सारी सार–संभाल अंकल ने ही की।

पति–पत्नि के रिश्ते के क्या मायने होते है ये इस जोडी को देखकर समझा जा सकता है आज.... आंटी को यदि अंकल 10 मिनट के लिए भी बिना बताए इधर उधर हो जाये तो आंटी के दिल की धड़कन बढ जाती है। वे अंकल को ज़रा भी इधर उधर नही होने देती और अंकल भी आंटी के इस भाव का पूरा सम्मान करते है और सम्मान भी पूरे आनंद के साथ बिना किसी दबाव या बंधन को महसूस किए। जहॉ भी जाते हैं दोनों जने साथ जाते हैं। अभी हाल ही में सम्पन्न हुए विकलांग विवाह में जब अंकल आंटी बहुत से लोगो में बैठे थे और अंकल उठ के जाने लगे तो आंटी की निगाह उन पर पडी तो वे वापस बैठ गए शायद वे उस प्यार के बंधन का आनंद लेते होगें। कोई पति अपनी पत्नी की Care कैसे कर सकता है उसके उदाहरण गिरीश अंकल हैं और उनका यह प्रेम जो भी देखता है वो उन पर निहाल हो जाता है।

एक उम्र के बाद जब शरीर निर्बल होने लगता है तो सबसे ज्यादा जरूरत मानसिक सहारे की होती है और जब जीवनसाथी गिरीश अंकल जैसा हो तो फिर क्या कहने लेकिन सबके भाग्य में ऐसा नही होता है....... आनन्द वृद्धाश्रम में रह रहे आवासियों को शायद यही सुख मिलता है। जीवनसाथी तो नहीं पर बहुत से संगी साथी बन जाते हैं कि हाँ हम सब हैं ना और यही ''मै'' शब्द जब ''हम'' बन जाता है तो जीवन की बहुत सारी मुसीबतें कम हो जाती हैं........ और हाँ आनन्द वृद्धाश्रम आवासियों के इस ''हम'' में आप भी शामिल हैं क्यों अप्रत्यक्ष तो आप भी उनसे जुड़ ही रहे हैं....... आपका और हमारा ''हम'' ऐसे ही बना रहे इस विश्वास के साथ.....

कल्पना गोयल

तीन सखियाँ..... सुख़ वृद्धाश्रम का

आनंद वृद्धाश्रम में एक नज़ारा अकसर देखने का मिलता है वो है तीन बुजुर्ग महिलाएँ एक कमरे में बतियाते हुए दिखना। ये तीन महिलाएँ हैं राजी बाई, बशीरन बाई और मोहन कुँवर। राजी बाई नीमच की रहने वाली है और अग्रवाल परिवार से हैं । राजी बाई को पार्किन्संस बीमारी है जिससे उनका गर्दन के उपर वाला हिस्सा लगातार हिलता रहता है और वे लगभग बिस्तर पर ही हैं और खाना भी बिस्तर पर ही खाती है केवल दीवार के सहारे से वे बाथरूम तक नित्यकर्म के लिए जाती हैं। बशीरन बाई मुस्लिम है और एकदम कमर झुकी हुई है लेकिन आवाज इतनी बुलंद की वे तीसरी मंजिल से आवाज देती हैं तो Ground Floor पर सुनाई देता है, वे आनंद वृद्धाश्रम की दंबग हैं। श्रीमती मोहन कुँवर राजपुत हैं और बहुत ही सौम्य और सुंदर महिला है । वे बहुत ही नरम मिजाज की हैं छोटी छोटी बातों पर उनकी आखों में आंसू आ जाते हैं। अकसर यह देखते हैं कि राजी बाई पंलग पर लेटी हैं, बशीरन बाई पैर उपर कर उनके पास प्लास्टिक की कुर्सी पर बैठी है और मोहन कुँवर जी पास वाले बेड पर बैठी हैं। उनको इस तरह से बैठे देखकर लगता है कि आनंद वृद्धाश्रम सफल है क्योंकि तीन अलग प्रदेशों से आई तीन अलग जाति–धर्म की महिलाए दोस्त बन जाए तो इससे अधिक और क्या चाहिये और जरा सोचिए कि आज जब घर में रहते हुए बुजुर्ग बच्चों के होते हुए भी कई बार एकाकी हो जाते है क्योंकि बच्चों को समय नहीं माता पिता के लिए..... वो फिर ये तीनों सहेलियाँ तो शानदार बुढ़ापा व्यतीत कर रही हैं..... हमें नहीं पता कि इनकी बातचीत के मुददे् क्या हैं पर इनको बतियाते देखना बहुत ही सुख होता हैं। तीनों सहेलियाँ एक दूसरे के सुख दुख मे काम आती हैं। कोई एक बीमार हो तो उसकी चिंता दूसरी दोनो को होती हैं राजी बाई जब बाथरूम जाती हैं और मोहन बाई अगर सहारा दे तो वे मना कर देती है कि खुद काम खुद ही करुं तो अच्छा है। आनंद वृद्धाश्रम में और छोटे मोटे मनमुटाव होते हैं। तारा संस्थान के माध्यम से जो कुछ भी हो रहा है उसमें सीधा जुड़े होने से सबसे बड़ा सुख या खुशी किसी का भला होता देखते में है। जब भी हम तारा नेत्रालय में जाते है और आंखों पर काला चश्मा चढ़ाए लोग जब ये कहते हैं कि पहले बिलकुल नहीं दिख रहा था और हमारे पैसे भी नहीं लगे...... या फिर...... गांव में जब तृप्ति योजना में जिनको राशन मिलता है वो कहते है कि आप लोग सहायता नहीं देते तो पता नहीं हमारा क्या होता था....... गौरी योजना की विधवा महिलाए जिनसे बात करो और उनके आंसू निकल जाते हैं...... वो जब आंखों में उम्मीद की चमक लिए कहती हैं कि हम अपने बच्चों को पढ़ा सकेंगी तो हम भी उनकी खुशी से सराबोर हो जाते हैं। लेकिन सबसे बडी खुशी जो हम रोज महसूस करते है वो आनंद वृद्धाश्रम में.....क्योंकि मैं और कल्पना जी वहीं पर दोपहर का भोजन लेते हैं और रोज आपको 30–40 वृद्ध मुस्काराते मिले–कोई नमस्ते, कोई आर्शीवाद कोई गर्मजोशी से हाथ मिलाए तो बस मजा आ जाता है...... और इन तीनों में कभी झगड़ा नहीं दिखा। इस तिकडी को देखकर बेहद बेहद खुशी मिलती है। बस, ईश्वर से यही प्रार्थना है कि इनमें से किसी को भी अपने पास बुलाने की ज़ल्दी ना करे.....

दीपेश मित्तल

गौरी योजना

एक अबला विधवा : इंद्रा पाहुजा का संघर्ष

आप भी एक दयनिय विधवा को पेंशन प्रदान करें रु. 1000/- प्रति माह

इंद्रा (उम्र 35, नि. उदयपुर) के हँसते–खेलते परिवार को ग्रहण लग गया जब उनके पति श्री दशरथ पाहुजा की हृदयाधात से मृत्यु हो गई। इंदिरा अपनी 10वीं कक्षा में पढ़ती बालिका के साथ निपट अकेली पड़ गई।

इस निर्धन विधवा ने हिम्मत नहीं हारी और अपने स्वास्थ्य की चिंता न करते हुए सिलाई–बुनाई और लोगों के घरों में कार्य करते हुए अपनी बालिका के भविष्य को सुधारने हेतु प्रयत्न आरम्भ कर दिए।

उसे अब अपना सम्पूर्ण जीवन अपनी पुत्री के अगामी जीवन में ही सिमटा नजर आने लगा। परन्तु बच्ची को प्रोइवेट स्कूल में पढ़ा पाना उसके लिए असम्भव सा था।

ऐसे नाजुक दौर में जब तारा संस्थान ने इंद्रा की मदद का बीड़ा उठाया तो उसने भगवान का लाख–2 शुक्रिया अदा करते हुए दानदाताओं की दिन–दूनी–रात चौगुनी प्रगति एवं उनकी लम्बी आयु की कामना की।

मानवीय संवेदनाओं को आहत करने वाली असहाय विधवा महिलाओं की पीड़ाओं को कुछ कम करने के प्रयास के प्रति यदि आप भी इच्छुक हों, तो कृपया प्रति विधवा महिला 1000 रु. प्रतिमाह की दर से 01 माह, 03 माह, 06 माह, 01 वर्ष या इससे भी अधिक अवधि के लिए अपना दान-सहयोग 'तारा संस्थान' को प्रेषित करने का अनुग्रह करें।

अज्ञानी होना उतनी शर्म की बात नहीं है जितना कि सीखने की इच्छा ना रखना।

तृप्ति योजना

सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाली नंदु कुंवर की कहानी

एक बुजुर्ग बेहसहारा को मासिक राहत पहुँचाएँ रु. 1500/- प्रति माह

नंदु कुंवर (42 वर्ष, नि. धूलजी, गुड़ा, जि. उदयपुर) के पति का देहान्त टी.बी. से होने के पश्चात इस महिला की स्थिति बिल्कुल निर्धन हो गई क्योंकि सारी जमा–पूंजी दवा–दारु में खर्च हो गई। अब रही–सही कसर भी मौत–मरण के पाखंड़ी आयोजनों ने पूरी कर दी जब मृत्यु भोज हेतु इन्हें अपना ट्रेक्टर बेचना पड़ा।

नंदु 5 बच्चों की माँ होते हुए अति निर्धन एवं बेसहारा स्त्री है। इनका परिवार में कोई मदद करने वाला नहीं है। इन्हें भूखे मरने की नौबत आ गई तब तारा संस्थान को खबर लगते ही इन्हें तृप्ति योजना के अन्तर्गत फौरन राहत पहुँचाना शुरु किया और तीन साल से उन्हें बराबर खाद्य सामग्री पहुँचाई जा रही है।

'तृप्ति योजना' के अन्तर्गत प्रत्येक बुजुर्ग को 1500/- मूल्य की खाद्य-सामग्री सहायता प्रतिमाह वितरित की जा रही है।

वर्तमान में तृप्ति योजना के अन्तर्गत 252 बुजुर्ग बन्धुओं को प्रतिमाह उपर्युक्त मात्रानुसार खाद्य सामग्री पहुँचाई जा रही है। आपके सहयोग सौजन्य से यह संख्या 500 करने का लक्ष्य है।

आपसे प्रार्थित खाद्य-सामग्री सहयोग-सौजन्य राशि रु. 4500 (3 माह), रु. 9000 (6 माह), रु. 18000 (एक वर्ष)

दि. 28.05.2015 को तारा संस्थान के संरक्षक श्री सत्यभूषण जैन सा. के निवास स्थल पर आचार्य श्री महाप्रभ से आशीर्वाद लेते हुए श्री ओ.पी. शर्मा, एम.एल.ए., विश्वास नगर, दिल्ली

दि पोन्टी चड्डा फाउण्डेशन के सौजन्य से गुरुद्वारा स्थित वाघमारे अस्पताल के पास पायल टाकीज के पीछे थाना रोड़, भिवंडी में तारा संस्थान, उदयपुर राजस्थान द्वारा 86 वाँ विशाल निःशुल्क नेत्र परीक्षण एवं मोतियाबिन्द ऑपरेशन चयन शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 167 नेत्र रोगियों का चेकअप कर 96 रोगियों को चश्मा व 57 को औषधि वितरित किया तथा 13 मोतियाबिन्द रोगी का चयन किया गया है। उक्त शिविर में भाजपा विधायक महेश चौघुले, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य श्याम अग्रवाल, भिवंडी कांग्रेस कमिटि अध्यक्ष आदि उपस्थित थे।

साथी हाथ बढ़ाना...

''साथी हाथ बढ़ाना'' में हम आग्रह करते हैं उन दानदाताओं से जो तारा संस्थान से जुड़े हैं कि वे अपने परिजनों और ईष्ट मित्रों को तारा संस्थान से जोड़ें।

सोच बहुत स्पष्ट है कि हम कहें कि तारा संस्थान के सेवा कार्यो में आप जुड़ें और कोई दानदाता कहे कि मैनें भी वहाँ दान किया है और आप भी अच्छे कार्य से जुडे तो बहुत बडा फर्क आएगा। इसलिए ''साथी हाथ बढाना'' में आपसे गुज़ारिश की थी कि अपने जानकार महानुभावों की सूचना हमें देवे जिन्हे हम आपके Reference से बात कर संस्थान से जोड़ सके मैं बता नहीं सकती कि कितनी खुशी है कि आप सब ने इस वाक्य ''साथी हाथ बढाना.....को खुले हाथों से लिया और हमे बहुत से पत्र मिले जिनमें बहुत सारे पते थे यहां तक कि कुछ पतों पर तो राशी भी लिखी थी जो नये महानुभाव दान देना चाहते थे। सबके नाम तो यहाँ लिखना संभव नही है लेकिन मै उन सभी को धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंनें साथी हाथ बढ़ाना..... में अपने मित्रों के पते हमें भेजे..... आप सब का सहयोग इसी तरह मिलता रहेगा तभी तारा संस्थान की गतिविधियाँ निरंतर चलती रहेगी....... बस आप से एक ही निवेदन है जब भी थोड़ा समय मिले नीचे दिए गये फार्म में 3–4 नाम, पते व फोन नम्बर भरकर हमें भेज दीजिए और अपने इन दोस्तों से कहियेगा कि तारा से वे भी जुड़ें।

आदर सहित

कल्पना गोयल

नाम	नाम ....
पता	पता ....
....	....
....	....
मोबाइल नं.	मोबाइल नं. ....
नाम	नाम ....
पता	पता ....
....	....
....	....
मोबाइल नं.	मोबाइल नं. ....

जिसके पास धैर्य है वह जो चाहे वो पा सकता है।

प्रेरक वचन :-

जो कुछ तुम्हारे पास बांटने को है बांटो...

बुद्ध कहते हैं दान सीखना होगा, उदारता सीखनी होगी, बांटना सीखना होगा। जब तक तुम इस किनारे हो, जितना बांटना सीख सको, सीख लो। जो कुछ तुम्हारे पास बांटने को है बांटो । क्योंकि वास्तव में तो तुम्हारा कुछ भी नहीं है। किसी भी चीज पर तुम्हारी मालकियत कर लेना एक अपराध है। जो कुछ भी तुम्हारा है या तुम दावा करते हो कि तुम्हारा है वह संपूर्ण के प्रति तुम्हारा अपराध है। अधिक से अधिक तुम उपयोग कर सकते हो, लेकिन मालकियत का दावा नहीं कर सकते । जब तुम नहीं थे चीजें तब भी थीं, और तब भी रहेंगी जब तुम जा चुके होओगे और पूरी तरह भुला दिए जाओगे। मालिक भला कौन है? हम खाली हाथ आते हैं, और खाली हाथ जाते हैं। तो जब तक तुम संसार में हो, बंद मुटठी न बने रहो। हाथ खोले रहो। खुले हाथ का व्यक्ति खुले मन का भी होता है। वास्तव में हाथ तुम्हारे मस्तिष्क का ही विस्तार हैं। तुम्हारा दायां मस्तिष्क तुम्हारे बायें हाथ से जुड़ा है, और तुम्हारा बायां मस्तिष्क तुम्हारे दायें हाथ से जुड़ा है। जब तुम अपना दायां हाथ चलाते हो तो तुम्हारा बायां मस्तिष्क चलता है और जब तुम अपना बायां हाथ चलाते हो तो तुम्हारा दायां मस्तिष्क सक्रिय होता है। जब तुम्हारे हाथ बंद मुट्ठी होते हैं तो तुम्हारा मन–मस्तिष्क भी बंद हो जाता है। तो बुद्ध कहते हैं कि पहली परामिता, वह गुण जो तुम्हें पार ले सकता है वह है बांटने की कला। वह यह नहीं कहते हैं कि क्या बांटो, क्योकि तुम क्या बांटते हो यह महत्वपूर्ण नहीं है। भले ही तुम एक गीत बांटो, कि एक नृत्य, कि अपना प्रेम, कि अपना अनुभव, कि अपना ध्यान, कि धन, कि घर, कि कपड़े, कि अपना शरीर–उसका प्रश्न नहीं है। लेकिन बांटना आये, यह अनिवार्य है। सामान्य अर्थशास्त्र तो कहता है कि जमा करना अनिवार्य है लेकिन जमा करने वाला इसी किनारे बंधा रहेगा, कभी दूसरे किनारे नहीं जा पायेगा–क्योंकि जमा करने वाला परिग्रही यह किनारा छोड़ ही नहीं पायेगा। जरा समझें । कोई तुमसे कहे, 'छोड़ो यह घर, मैं तुम्हें इससे बड़ा घर बताता हूँ, 'लेकिन तुम कहोगे, पहले इस घर में गढ़े हुए अपने सारे खजाने तो बटोर लूं। मेरी जीवन भर की पूंजी इस घर में है, वह सब मैं साथ ले लूं तभी जा पाउंगा। 'लेकिन दूसरा किनारा ऐसा है कि इस किनारे से तुम कुछ भी न ले जा पाओगे। यह एक सुंदर उलटबांसी है : इस किनारे से तुम कुछ भी साथ नहीं ले जा सकते, लेकिन इस किनारे जो कुछ भी तुम्हारे पास है उसे जी भर बांट लो तो बांटने वाला मन साथ ले जा सकते हो । अपना घर तो तुम नहीं ले जा सकते, अपना धन तो तुम साथ नहीं ले जा सकते, लेकिन अपना प्रेम और अपनी करूणा ले जा सकते हो। और करुणा ही काम आएगी।

- ओशो

मील के पत्थर :-

आप भी एक ऑपरेशन का दान
सहयोग करें
रु. 3000/-

तारा नेत्रालय, उदयपुर द्वारा 10,000 वाँ मोतियाबिन्द ऑपरेशन

तारा संस्थान के अंतर्गत संचालित तारा नैत्रालय, उदयपुर में दि. 4 अप्रैल को 10,000 वां (दस हजारवाँ) मोतियाबिंद ऑपरेशन सफलता–पूर्वक संपन्न किया गया! इस उपलब्धि के अवसर पर उदयपुर हिरण मगरी सेक्टर–6 स्थित तारा संस्थान एवं नेत्रालय परिसर में संस्थान अध्यक्ष श्रीमती कल्पना गोयल ने केक काटकर तारा नैत्रालय के डॉ. लीना दवे और डॉ. सुबोध सर्राफ सहित सारे स्टाफ को इसका श्रेय देते हुए बधाई दी। उन्होंने कहा कि जो ग्रामीण, निर्धन एवं निःशक्त–जन मोतियाबिंद ऑपरेशन का खर्चा अन्य अस्पतालों में वहन नहीं कर सकते, तारा नैत्रालय उनकी नैत्र ज्योति लौटाकर मानवीय कल्याण हेतु प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। इस मौके पर संस्थान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री दीपेश मित्तल ने समस्त दानदाताओं का आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में इसी प्रकार के सेवा–भावी कार्यों के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता जाहिर की। उल्लेखनीय है कि तारा संस्थान, उदयपुर सहित दिल्ली एवं मुंबई में भी तारा नैत्रालय संचालित करता है जहां निर्धन लोगों के मोतियाबिंद ऑपरेशन पूर्णतया निःशुल्क किये जाते हैं।

कोई व्यक्तिअपने कार्यों से महान होता है, अपने जन्म से नहीं।

कर भला हो भला...

एक बार एक लड़का अपने स्कूल की फीस भरने के लिए एक दरवाजे से दूसरे दरवाजे तक कुछ सामान बेचा करता था। एक दिन उसका कोई सामान नहीं बिका और उसे बड़े जोर से भूख भी लग रही थी। उसने तय किया कि अब वह जिस भी दरवाजे पर जायेगा, उससे खाना मांग लेगा.. पहला दरवाजा खटखटाते ही एक लड़की ने दरवाजा खोला, जिसे देखकर वह घबरा गया और बजाय खाने के उसने पानी का एक गिलास माँगा.. लड़की ने भांप लिया था कि वह भूखा है, इसलिए वह एक बड़ा गिलास दूध का ले आई. लड़के ने धीरे–धीरे दूध पी लिया.. ''कितने पैसे दूं?'' लड़के ने पूछा। ''पैसे किस बात के?'' लड़की ने जवाव में कहा ''माँ ने मुझे सिखाया है कि जब भी किसी पर दया करो तो उसके पैसे नहीं लेने चाहिए।'' तो फिर मैं आपको दिल से धन्यवाद देता हूँ। जैसे ही उस लड़के ने वह घर छोड़ा, उसे न केवल शारीरिक तौर पर शक्ति मिल चुकी थी, बल्कि उसका भगवान् और आदमी पर भरोसा और भी बढ़ गया था.. सालों बाद वह लड़की गंभीर रूप से बीमार पड़ गयी. लोकल डॉक्टर ने उसे शहर के बड़े अस्पताल में इलाज के लिए भेज दिया। विशेषज्ञ डॉक्टर होवार्ड केल्ली को मरीज देखने के लिए बुलाया गया. जैसे ही उसने लड़की के कस्बे का नाम सुना, उसकी आँखों में चमक आ गयी.. वह एकदम सीट से उठा और उस लड़की के कमरे में गया. उसने उस लड़की को देखा, एकदम पहचान लिया और तय कर लिया कि वह उसकी जान बचाने के लिए जमीन–आसमान एक कर देगा.. उसकी मेहनत और लग्न रंग लायी और उस लड़की कि जान बच गयी। डॉक्टर ने अस्पताल के ऑफिस में जा कर उस लड़की के इलाज का बिल लिया.. उस बिल के कोने में एक नोट लिखा और उसे उस लड़की के पास भिजवा दिया। लड़की बिल का लिफाफा देखकर घबरागयी.. उसे मालूम था कि वह बीमारी से तो वह बच गयी है लेकिन बिल कि रकम जरूर उसकी जान ले लेगी। फिर भी उसने धीरे से बिल खोला, रकम को देखा और फिर अचानक उसकी नजर बिल के कोने में पेन से लिखे नोट पर गयी.. जहाँ लिखा था, एक गिलास दूध द्वारा इस बिल का भुगतान किया जा चुका है। नीचे उस नेक डॉक्टर होवार्ड केल्ली के हस्ताक्षर थे। खुशी और अचम्भे से उस लड़की के गालों पर आंसू टपक पड़े उसने ऊपर कि और दोनों हाथ उठा कर कहा, ''हे भगवान..! आपका बहुत–बहुत धन्यवाद.. आपका प्यार इंसानों के दिलों और हाथों के द्वारा न जाने कहाँ–कहाँ फैल चुका है. अगर आप दूसरों पर.. अच्छाई करोगे तो.. आपके साथ भी.. अच्छा ही होगा...!!'' **अब आपको दो में से एक चुनाव करना है..! या तो आप इसे शेयर करके इस सन्देश को हर जगह पहुंचाएँ.. या अपने आप को समझा लें कि इस कहानी ने आपका दिल नहीं छूआ..!!**

पुत्र के लिए सबक एवं पिता के लिए उम्मीद

एक बेटा अपने वृद्ध पिता को रात्रि भोज के लिए एक अच्छे रेस्टॉरेंट में लेकर गया। खाने के दौरान वृद्ध पिता ने कई बार भोजन अपने कपड़ों पर गिराया। रेस्टॉरेंट में बैठे दुसरे खाना खा रहे लोग वृद्ध को घृणा की नजरों से देख रहे थे लेकिन वृद्ध का बेटा शांत था। खाने के बाद बिना किसी शर्म के बेटा, वृद्ध को वॉश रूम ले गया। उसके कपड़े साफ किये, उसका चेहरा साफ किया, उसके बालों में कंघी की, चश्मा पहनाया और फिर बाहर लाया। सभी लोग खामोशी से उन्हें ही देख रहे थे। बेटे ने बिल पे किया और वृद्ध के साथ बाहर जाने लगा। तभी डिनर कर रहे एक अन्य वृद्ध ने बेटे को आवाज दी और उससे पूछा ''क्या तुम्हे नहीं लगता कि यहाँ अपने पीछे तुम कुछ छोड़ कर जा रहे हो ?? बेटे ने जवाब दिया ''नहीं सर, मैं कुछ भी छोड़ कर नहीं जा रहा।'' वृद्ध ने कहा ''बेटे, तुम यहाँ छोड़ कर जा रहे हो, प्रत्येक पुत्र के लिए एक शिक्षा (सबक) और प्रत्येक पिता के लिए उम्मीद (आशा)।'' दोस्तो आमतौर पर हम लोग अपने बुजुर्ग माता पिता को अपने साथ बाहर ले जाना पसँद नही करते और कहते है क्या करोगो आप से चला तो जाता नहीं, ठीक से खाया भी नही जाता आप तो घर पर ही रहो, वही अच्छा होगा। क्या आप भूल गये जब आप छोटे थे और आप के माता पिता आप को अपनी गोद मे उठा कर ले जाया करते थे? आप जब ठीक से खा नही पाते थे तो माँ आपको अपने हाथ से खाना खिलाती थी और खाना गिर जाने पर डाँट नही प्यार जताती थी फिर वही माँ बाप बुढापे में बोझ क्यों लगने लगते है??? माँ बाप भगवान का रूप होते हैं उनकी सेवा कीजिये और प्यार दीजिये क्योंकि एक दिन आप भी बुढ़े होगे फिर अपने बच्चो से सेवा की उम्मीद मत करना वो भी तो आप से ही सिखते हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा (Naturopathy) का प्रभाव

चिकित्सा केवल दवाई से होनी चाहिए यह बात प्राचीन मान्यता के खिलाफ है। औषधि तो हमारी जीवन शक्ति (रेजिस्टेंस पॉवर) को कम ही करती है। योग, प्राणायाम, तथा पानी जैसे अनेक सरलतम साधन हैं, जिनसे बिना दवाई के हमारे शरीर का उपचार हो सकता है। आज भी वैकलिपक चिकित्सा में, अंकुरित चने–मूँग तथा मैथी दाने भोजन में लेने से, अधिक पानी पीने से आदि ये सभी ऐसे प्रयोग हैं, जिनसे यथाशीघ्र ही लाभ होता है। एक–एक गमले में एक–एक मुठ्ठी गेहूँ एक–एक दिन छोड़कर सात गमलों में जुआरे बोए जाएँ। इन जुआरों के रस से टी.बी., कैंसर जैसी घातक बीमारियों को भी दबाया जा सकता है।

अचूक और अनोखी वॉटर थेरेपी : बस, 4 ग्लास पानी...

सिरदर्द, उच्च रक्तचाप, खून की कमी, मोटापा, बेहोशी, दमा, खांसी, लीवर की कमजोरी, पेशाब की बीमारी, गैस, कब्ज, एसीडिटी, कमजोरी, आंख की बीमारी, मानसिक रोग, महिलाओं को होने वाली बीमारियां एवं शरीर में उत्पन्न होने वाली कई नई–पुरानी व्याधियों को दूर करने के लिए जापान की सकनीरा एसोसिएशन द्वारा पानी के प्रयोग का प्रचार–प्रसार किया जा रहा है। पानी के द्वारा रोगों को दूर करने की यह सादी–सरल विधि है। भारत जैसे गरीब देश के लिए तो यह विधि बिना पैसा खर्च की चमत्कारी पद्धति सिद्ध हो सकती है। कमी है तो बस इसके जनसाधारण के बीच प्रसार की। पानी प्रयोग की विधि क्या है : सुबह उठकर बिस्तर में बैठ जाएं और चार बड़े ग्लास भरकर (लगभग एक लीटर) पानी एक ही समय एक साथ पी जाएं। ध्यान रहे कि पानी पीने के पहले मुंह न धोएं, न ब्रश करें तथा शौचकर्म भी न करें। पानी पीने के बाद थूकें नहीं।

मोतियाबिन्द रोग : कुछ तथ्य

मोतियाबिन्द

फेको पद्धति द्वारा मोतियाबिन्द का हटाया जाना

लैंस का प्रत्यारोपण

प्रत्यारोपित लैंस

मोतियाबिन्द फोटो

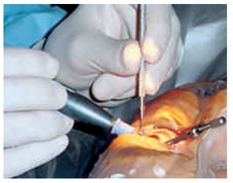

मोतियाबिन्द ऑपरेशन

मोतियाबिन्द आँखों का एक सामान्य रोग है। प्रायः पचपन वर्ष की आयु से अधिक के लोगों में मोतियाबिन्द होता है, किन्तु युवा लोग भी इससे सुरक्षित नहीं है। मोतियाबिन्द विश्व भर में अंधत्व का मुख्य कारण है। 60 से अधिक आयु वालों में 40 प्रतिशत लोगों में मोतियाबिन्द विकसित होता है। शल्य क्रिया ही इसका एकमात्र इलाज़ है, जो सुरक्षित एवं आसान प्रक्रिया है। आँखों का लेंस आँख से विभिन्न दूरियों की वस्तुओं पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है। समय के साथ लैंस अपनी पारदर्शिता खो देता है तथा अपारदर्शी हो जाता है। लैंस के इस धुंधलेपन को मोतियाबिन्द कहा जाता है।

मोतियाबिन्द शल्यक्रिया

वर्तमान में, नेत्ररोग विशेषज्ञों द्वारा किए जाने वाले मोतियाबिन्द के शल्यक्रिया द्वारा ईलाज के दो मुख्य प्रकार हैं :

1. PHACO (फेको) : इस प्रकार के ऑपरेषन में 2–3 एम.एम. का चीरा लगाया जाता है। जिसके पष्चात फोल्डेबल लेंस फिट किया जाता है। चीरा छोटा लगने के कारण घाव जल जल्दी भर जाता है।
2. SICS (एस.आई.सी.एस.) : इस प्रकार के ऑपरेषन में 5.25 एम.एम. का चीरा लगाया जाता है जिसके बाद लैंस को फिट किया जाता है।

हर एक चीज में खुबसूरती होती है, लेकिन हर कोई उसे नहीं देख पाता।

बेटी बचाओ :-

सुकन्या खाता

भारतीय डाक विभाग ने बेटी बचाओं अभियान के तहत सुकन्या खाता खोलने की नई योजना शुरू की है सुकन्या खाते की विशेषताएं और इसे खोलने के लिए पात्रताऐं :—

- खाता किसी भी डाकघर में अविवाहित बालिका के नाम जन्म से लेकर 10 वर्ष की उम्र तक खोला जा सकता है। खाते के लिए जन्म प्रमाण पत्र साथ में लगाएँ।
- माता या पिता के मार्फत खाता खोला जायेगा। माता या पिता को निवास प्रमाण पत्र एवं पहचान के सबूत के रूप में वैध दस्तावेजों की फोटो प्रति एवं 3 फोटो देने होगें।
- खाते पर 9.2 प्रतिशत की उच्च दर से वार्षिक ब्याज के मिलेगा साथ में आयकर में छुट भी देय है। इससे ज्यादा ब्याज पूरे भारत में किसी भी वित्तिय संस्थान द्वारा नहीं दिया जाता है।
- खाता कम से कम 1000 रूपये जमा करवाते हुए खोला जा सकता है।

प्रेरणा :-

सपने सच होंगे

कहीं किसी शहर में एक छोटा लड़का रहता था। उसके पिता एक अस्तबल में काम करते थे। लड़का रोजाना देखता था कि उसके पिता दिन—रात घोडों की सेवा में लगे रहते है, जबकि घोड़ों के रैंच का मालिक आलीशान तरीके से जिन्दगी बिताता है और खूब मान—सम्मान पाता है। यह सब देखकर लड़के ने यह सपना देखना शुरु कर दिया कि एक दिन उसका भी एक बहुत बड़ा रेंच होगा, जिसमें सैंकडों बेहतरीन घोड़े पाले और प्रशिक्षित किए जाएंगें। एक दिन लड़के के स्कूल में सभी विद्यार्थियों से यह निबंध लिखने के लिए कहा गया कि वे बड़े होकर क्या बनना और करना चाहते हैं ? लड़के ने रात में जागकर बडी मेहनत करके खूब लम्बा निबंध लिखा, जिसमें उसने बताया कि वह बडा होकर घोडों के रैंच का मालिक बनेगा। उसने अपने सपने को पुरे विस्तार से लिखा और 200 एकड़ के रैंच की एक तस्वीर भी बनाई। लड़के ने उस निबंध में अपना दिल खोलकर रख दिया और अगले दिन शिक्षक को वह निबंध थमा दिया। तीन दिन बाद सभी विद्यार्थियों को अपनी कॉपियां वापस मिल गई। लड़के के निबंध का परिणाम बड़े से लाल शब्द से 'फेल' लिखा हुआ था। लड़का अपनी कॉपी लेकर शिक्षक से मिलने गया । उसने पूछा, 'आपने मुझे फेल क्यों किया?' शिक्षक ने कहा, ''तुम्हारा सपना मनगढ़ंत है और इसके साकार होने की कोई संभावना नहीं है। तुम लोगों के पास कुछ भी नहीं है। बेहतर होता यदि तुम कोई छोटा—मोटा काम करने के बारे में लिखते। मैं तुम्हें एक मौका और दे सकता हूँ। तुम इस निबंध को दोबारा लिख दो और कोई वास्तविक लक्ष्य बना तो तो मैं तुम्हारे ग्रेड पर दोबारा विचार कर सकता हूँ।'' वह लड़का घर चला गया और पूरी रात वह यह सब सोचकर सो न सका। बहुत विचार करने के बाद उसने शिक्षक को वही निबंध ज्यों का त्यों दे दिया और कहा, 'आप अपने 'फेल' को कायम रखे और मैं अपने सपने को कायम रखूंगा।' बीस साल बाद उसी शिक्षक को एक घुड़दौड़ का एक अंतरराष्ट्रीय मुकाबला देखने का अवसर मिला। दौड़ खत्म हुई तो एक व्यक्ति ने आकर शिक्षक को आदरपुर्वक अपना परिचय दिया। घुड़दौड़ की दुनिया में एक बड़ा नाम बन चुका यह व्यक्ति वही छोटा लड़का था, जिसने अपना सपना पूरा कर लिया था। कहते हैं यह एक सच्ची कहानी हैं। होगी, न भी हो तो क्या! असल बात तो यह है कि हमें किसी को अपना सपना चुराने नहीं देना है और न ही किसी के सपने की अवहेलना करनी है। हमेशा अपने दिल की सुनना है। कहने वाले कुछ भी कहते रहें। खुली खुली आँखों से जो सपने देखा करते हैं, उनके सपने पूरे होते हैं।

फायदा कमाने के लिए न्योते की जरुरत नहीं होती।

मासिक अपडेट्स :-

मोतियाबिन्द जाँच - ऑपरेशन हेतु चयन शिविर

तारा संस्थान द्वारा निर्धन वृद्ध बन्धुओं की आँखों में सामान्यतः पाये जाने वाले मोतियाबिन्द के निदान और ऑपरेशन हेतु चयन के लिए शिविर आयोजित किये जाते हैं। दूरस्थ एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले मोतियाबिन्द ग्रस्त बन्धुओं की स्थिति अधिक ही पीड़ादायक है, क्योंकि प्रथम तो उन्हें मोतियाबिन्द–ऑपरेशन की सुविधा आसानी से उपलब्ध नहीं है एवं द्वितीय, निर्धनता उनकी चिकित्सा में बड़ा अवरोधक है। तारा संस्थान ने ऐसे निर्धन बन्धुओं की जाँच हेतु शिविर लगाने एवं चयनित मोतियाबिन्द ग्रस्त बन्धुओं के शिविर स्थल के निकटवर्ती कस्बे या शहर में स्थित अधुनातन सुविधाओं से सम्पन्न नेत्र चिकित्सालयों या संस्थान के उदयपुर, दिल्ली व मुम्बई स्थित 'तारा नेत्रालय' में सर्वथा निःशुल्क ऑपरेशन करवाने का कार्य प्रारंभ किया है। निःशुल्क सुविधाओं में मोतियाबिन्द की जाँच, दवाइयाँ, लेंस, ऑपरेशन, चश्मे, रोगियों का परिवहन, भोजन तथा देखभाल आदि सम्मिलित है।

दानदाताओं के सौजन्य से माह अप्रैल, 2015 के मध्य आयोजित शिविरों का संक्षिप्त विवरण

जगदीश जी, उदयपुर

घीसी बाई, चित्तौड़गढ़ (राज.)

मंजू देवी, दिल्ली

विमला देवी, दिल्ली

सदानन्द जी, मुम्बई

हरजीत जी, मुम्बई

तारा नेत्रालय, उदयपुर में आयोजित शिविर

शिविर दिनांक	सौजन्यकर्त्ता	ओ.पी.डी.	चयनित रोगी	चश्मे	दवाई
06.05.2015	श्री सुर्य नारायण जी खण्डेलवाल, निवासी – चैन्नई	100	08	32	42
07.05.2015	श्री शादी राम बालमुकुन, निवासी – मोडगंज, सहारनपुर (यू.पी.)	100	12	36	42
08.05.2015	टी. सी. जैन ज्वैलर्स, निवासी – सहारनपुर (यू.पी.)	91	10	41	46
09.05.2015	श्री अर्जुन कुमार अग्रवाल, निवासी – गोरखपुर (यू.पी.)	112	06	37	56
12.05.2015	डॉ. एस.के. लाट, अन्नपूर्णा चेस्ट क्लिनिक, गोरखपुर (यू.पी.)	106	10	36	42
13.05.2015	श्रीमती अनुप देवी – पूखराज जैन, सेठी फ्लोर मिल प्रा.लि. चरगांवा, गोरखपुर	92	10	28	39
14.05.2015	श्रीमती कुसुम श्रीवास्तव – स्व. दुर्गालाल जी श्रीवास्तव, गोरखपुर (यू.पी.)	108	14	25	57
16.05.2015	श्री सागरमल जी जोशी, आसाम टी. सेन्टर कोर्ट रोड, सहारनपुर (यू.पी.)	116	06	24	78
18.05.2015	श्रीमान् त्रयम्बक लालजी मुरारजी भाई सोनछात्रा, निवासी – गोन्दिया	114	10	15	90
21.05.2015	श्री महावीर प्रसाद जी जैन – श्रीमती रानी जैन, निवासी – उदयपुर	90	10	15	58
23.05.2015	श्री अशोक कुमार गर्ग, निवासी – पिपलीया मण्डी, नीमच (म.प्र.)	104	08	22	73
23.05.2015	श्री नीरज सुधारकर राव बैजलवार, निवासी – यवतमाल (महाराष्ट्र)	104	08	22	73
25.05.2015	श्री कैलाश रंग लाल जी अग्रवाल, निवासी – आकोला (महाराष्ट्र)	98	07	20	80
30.05.2015	श्री प्रणम मालू, निवासी – अमरावती (महाराष्ट्र)	100	07	27	105

तारा नेत्रालय, दिल्ली में आयोजित शिविर

28.05.2015	श्री ज्ञान चन्द जिन्दल मेमोरियल ट्रस्ट, दिल्ली	145	03	35	40

मोतियाबिन्द जाँच-चयन-शिविर आयोजन एवं 30 ऑपरेशन सहयोग सौजन्य, प्रति शिविर – 151000 रु.
चश्मा जाँच – चश्मा वितरण – दवाई सहयोग राशि, प्रति शिविर – 21000 रु.

यदि हम अपने काम में लगे रहे तो हम जो चाहें वो कर सकते हैं।

दि. 18.05.2015 : श्रीमान त्रयम्बक लाल जी (नि. गोंदिया, महा.) ने तारा नेत्रालय में 20 ऑपरेशन करवाये एवं आनन्द वृद्धाश्रम के बुजुर्गों को भोजन करवाया।

लाभान्वित मरीजों के बीच में बैठे हुए

वृद्धाश्रम वासियों को भोजन परोसते हुए

अन्य दानदाताओं के सौजन्य से देशभर में आयोजित शिविरों की झलकियाँ

नई दिल्ली कैम्प में रोगी जाँच

उदयपुर (राज.) ग्रामीण क्षेत्र में एक शिविर में रजिस्ट्रेशन दृश्

मुम्बई में आयोजित शिविर में दवाईया व चश्में वितरण

शिविर दिनांक	सौजन्यकर्त्ता	स्थान	ओ.पी.डी.	चयनित रोगी	चश्मे	दवाई
03.05.2015	जय श्री कृष्णा	नई दिल्ली	1200	300	300	650
09.05.2015	जय श्री कृष्णा	सवना, उदयपुर	248	28	94	146
10.05.2015	के.एल. नागौरी, निवासी - उदयपुर	धारता, उदयपुर	167	4	30	109
10.05.2015	अजीत सिंह जी, मुनिरका, दिल्ली - 67	शकुरबस्ती, दिल्ली	315	9	122	170
10.05.2015	ओरेंज हॉस्पीटल, मीरा रोड़, मुम्बई	ठाणे (वे.), मुम्बई	41	2	12	32
17.05.2015	श्रीमती लहरी बाई धर्मपत्नी श्री रामचन्द्र जी, निवासी - सेमारी	सेमारी, उदयपुर	90	3	10	75
17.05.2015	श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली	उत्तम नगर, नई दिल्ली	680	11	250	420
17.05.2015	मुक्ति गोल्ड, मुम्बई	ठाणे (ई.), मुम्बई	95	7	25	30
19.05.2015	पी.के. बजाज, सहपरिवार, निवासी-वेस्ट पंजाबी बाग, नई दिल्ली	शाहदरा, दिल्ली	268	9	158	226
24.05.2015	श्री कैलाश नगर पूज्य सिन्धी पंचायत, कालाजी, गोराजी, उदयपुर	उदयपुर	190	7	30	180

तीन चीजें जादा देर तक नहीं छुप सकती, सूरज, चंद्रमा और सत्य।

स्व. श्री पोण्टी चड्डा

स्व. सरदार कुलबन्त सिंह चड्डा की प्रेरणा से ''The Ponty Chaddha Foundation'' के सौजन्य से आयोजित शिविर

शिविर दिनांक	स्थान	ओ.पी.डी.	चयनित रोगी	चश्मे	दवाई
03 मई, 2015	सचखण्ड नानक धाम (त्महकण), इन्द्रापुरी, लोनी, गाजियाबाद	670	32	380	313
10 मई, 2015	गुरु नानक दख निवारण दरबार, निलोथी एक्ट., नई दिल्ली	470	9	174	428
17 मई, 2015	श्री दशोरा दरबार गुरुद्वारा, तीन हाथ नाका, थाने (वे.), मुम्बई	155	7	60	50
24 मई, 2015	गुरुद्वारा श्री गुरु सिंघ सभा, सेक्टर 15, बसुन्धरा, गाजियाबाद	150	5	67	127
30 मई, 2015	गुरुद्वारा वाघमारे हॉस्पीटल के पास, थाना रोड, भिवंडी (महा.)	167	13	96	73

इस शिविरों में चयनित सभी रोगियों के तारा नेत्रालय, दिल्ली एवं मुम्बई में निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन करवाए गए हैं।

मानवीय सेवा सौजन्य के लिए तारा संस्थान, उदयपुर, दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी एवम् वेव इन्फ्राटेक, दिल्ली के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है एवं स्व. सरदार कुलबन्त सिंह चड्डा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

मारुति ट्रस्ट, यू.के. द्वारा नेपाल भूकंप पीड़ितों को मदद

(तारा संस्थान की सहयोगी संस्था)

मारुति ट्रस्ट, यू.के. द्वारा नेपाल की इस मुसीबत की घड़ी में वहाँ अनेक परिवारों को 30 कि.ग्रा. चावल, 30 कि.ग्रा. आटा व 7 कि.ग्रा. दाल प्रति परिवार को दिए गए। साथ ही साथ उनके आश्रय हेतु तम्बू (तारपोलिन) की भी व्यवस्था रखी जानी है। ट्रस्ट का लक्ष्य 200 से भी अधिक परिवारों को इसी प्रकार की मदद पहुँचाना हैं।

स्वागत :-

तारा संस्थान में पधारे अतिथि महानुभावों का स्वागत सम्मान

श्री रामबिलास अग्रवाल, बैंगलोर

श्रीमती भारती बेन कोठारी, मुम्बई

श्रीमती रुमा बिरला एवं ग्रुप

श्री गणेश लाल सुथार,

श्री सीताराम जी, मेरठ

श्री कैलाश चन्द्र जी, मुम्बई

''तारा परिवार का सौभाग्य कि आपने अभिनन्दन का अवसर प्रदान किया''

डॉ. मीना सिंघल गंगोड़, शाहरनपुर (यू.पी.)

श्री राजेश मित्तल, सूरत (गुज.)

श्री शिव दत्त एवं सुपुत्र श्री कृष्ण स्वरुप शर्मा द्वारका, दिल्ली

श्री ईसर राम बिस्सू, लाछड़सर (रतनगढ़)

श्री सतीष आहुजा, सूरत (गुज.)

श्री चाँद जी, सूरत (गुज.)

श्री कमल चन्द जैन, बीकानेर (राज.)

श्री राम अवतार जी सथैय
दिल्ली

श्रीमती कुसुम श्रीवास्तव
गोरखपुर (यू.पी.)

श्री ईश्वर दास लखवानी
किशनगढ़, अजमेर (राज.)

डॉ. एस.के. लाट
गोरखपुर (यू.पी.)

खुद वो बदलाव बनिए जो दुनिया में आप देखना चाहते हैं।

धन्यवाद :-

NAME AND PLACE OF THE DONORS, WE ARE GRATEFUL TO THEM

Donors are requested kindly to send their photographs alongwith Donation for publishing in TARANSHU

Mr. Brijbhushan Goyal & Mrs. Shanti Devi
Lucknow (UP)

Mr. Mahaveer Jain & Mrs. Rani Jain

Mr. Puranmal Siddha & Mrs. Vijay Laxmi Siddha
Shridungargarh (Bikaner)

Mr. Shankalpa Jain & Mrs. Smarika Jain
Surat (Guj.)

Lt. Mr. Mohanlal Mod & Mrs. Kaushalya Devi

Mr. Adarsh Kumar Agrawal & Mrs. Shama Rani
Jalandhar (PB)

Lt. Mr. Umakant Shrivastav &
Mrs. Ram Sakhi Devi, Varanasi (UP)

Mr. Avadh Narayan Upadhyay & Mrs. Indu
Gorakhpur (UP)

Mr. Jugal Kishore Patodiya & Mrs. Urmila Devi
Kolkata

Mr. Adesh Kumar Jain & Mrs. Raj Rani Jain

Mr. Shiv Mohan & Mrs. Surbhi
Patiala

Mr. Ram Vallabh Bhati & Mrs. Rameshwari Devi
Nagaur (Raj.)

Lt. Dugaprasad Srivastav
Gorakpur (UP)

Mr. Hanuman Kachchhawa
Bikaner (Raj.)

Lt. Mr. Raghunath Parihar
Bali, Pali (Raj.)

Mrs. Kusum Jain
Chunnabhatti, Mumbai

Shreedhar Agrawal
Bijnaur (UP)

Mrs. Suchitra Agrawal
Kolkata

Mr. Prem Prakash Gupta
Meerut

Mrs. Seeta Rani
Karnal (HR)

Mr. Mohan Ji Nenwani
Bhopal (MP)

Mrs. Shreshtha Devi
Karnal (HR)

Mr. Temichand Taylor

Mr. Mukesh Kumar Khare

Mahi Sharma
Janjgir - Champa (CG)

Chanchal Sharma
Janjgir - Champa (CG)

Lt. Mr. Pramod Pal Singh
Ambala

Mr. Sagar Mal Joshi
Shahranpur (UP)

Mr. Ashok Prakash Swami
Lunkaransar (Bikaner)

Mr. Ramgopal Arya
Bikaner (Raj.)

Mrs. Aruna Pediwal
Shriganganagar (Raj.)

Mr. Neeraj Gupta

Mr. Suresh Kumar Kanodiya
Kolkata

NAME AND PLACE OF THE DONORS, WE ARE GRATEFUL TO THEM

Donors are requested kindly to send their photographs alongwith Donation for publishing in TARANSHU

Mr. Arun Kumar Seth & Mrs. Durga Devi
Hathipole, Udaipur

Lt. Mr. Chainraj & Mrs. Vimla Devi Talesara
Pali (Raj.)

Mr. Satya Narayan & Mrs. Premlata Bansal
Ajmer (Raj.)

Mr. Vishnu Sharan & Mrs. Neelam Sharma
Ajmer (Raj.)

Mr. Rajesh & Mrs. Neeta Gajabi
Ichchalikaran

Mr. Shailendra & Mrs. Rekha Kapoor
Indore (MP)

Mr. Omprakash & Mrs. Shyama Devi Joshi
Dhamangaon, Amrawati (MH)

Mr. Pramod & Mrs. Veena Rani
Farukha (UP)

Mr. Shyam Lal & Mrs. Sushila Mittal
Vijaynagar, Ajmer (Raj.)

Mr. Purnaram & Mrs. Shanti Devi
Bikaner (Raj.)

Mr. Murari Lal & Mrs. Vimla Parihar
Sahba, Churu (Raj.)

Mr. Hari Shankar & Mrs. Sharda Devi Goyal
Agra (UP)

Mr. Ritesh Sanghi
Hyderabad

Mr. Vimal Kishore Agrawal
Agra (UP)

Mr. Kailash Chandra Bagadi
Bikaner (Raj.)

Mr. Girraj Kishore Agrawal
Sanganer, Jaipur (Raj.)

Mr. Tilak Raj
Delhi - 18

Mrs. Santosh Kumari
Kota (Raj.)

Mr. Bundu Bhai Mansuri
Kishangarh (Ajmer)

Mr. VIjay Kumar Agrawal
Ajmer (Raj.)

Mr. Bal Krishna Rohela
Rampur (UP)

Mr. Cheta Devi Bhagwani
Agra (UP)

Mr. Deleep Goyal
Pali (Marwad)

Mr. Ajay Kapoor
Ajmer (Raj.)

Lt. Mrs. Asha Josho
Jalandhar

Mr. Ram Suthar
Ranjeetpura (Bikaner)

Mrs. Vimla Devi
Ajmer (Raj.)

Mrs. Rekha Gupta

Mr. Ashok Purohit
Jodhpur (Raj.)

Mr. Sangram Singh Chandel
Ajmer (Raj.)

Mr. Suresh Kumbhaj
Jodhpur (Raj.)

Mr. Satya Narayan Kalani
Pali (Raj.)

Mrs. Kaushal Gupta
Ajmer (Raj.)

FCRA

Tara Sansthan is registered under Foreign Contribution Regulation Act (FCRA) with the Govt of India for receiving Donations from Foreign Countries

'Tara' Contact Details - Office

Mumbai Office : Unit No. 1408/7, 1st Floor, Israni Indl. Estate, Penkarpara, Nr. Dahisar Check-post, Thane - 401104 (M.S.) INDIA
Jagdish Choubisa Cell : 07821855748, Shri Bharat Menaria Cell : 07821855755

Delhi Office: WZ-270, Village - Nawada, Opp. 720, Metro Pillar, Uttam Nagar, Delhi - 59
Shri Amit Sharma Cell : 07821855747

Surat Office : 295, Chandralok Society, Parwat Gaon, Surat (Guj.)
Shri Prakash Acharya Cell : 07821855751 (Raj.)

'Tara' Centre - Incharge

Shri S.N. Sharma
Mumbai (M.S.)
Cell : 09869686830

Smt. Rani Dulani
10-B/B, Viceroy Park, Thakur Village,
Kandiwali (W), Mumbai - 400 101, Cell : 09029643708

Shri Prahlad Rai Singhaniya
Hyderabad (A.P.)
Cell : 09849019051

Shri Pawan Sureka Ji
Madhubani (Bihar)
Cell : 09430085130

Shri Satyanarayan Agrawal
Kolkata
Cell : 09339101002

Shri Bajrang Ji Bansal
Kharsia (CG)
Cell : 09329817446

Smt. Pooja Jain
Saharanpur (UP)
Cell : 09411080614

Shri Naval Kishor Ji Gupta
Faridabad (HR.)
Cell : 09873722657

Shri Anil Vishvnath Godbole
Ujjain (MP)
Cell : 09424506021

Shri Vishnu Sharan Saxena
Bhopal (M.P.)
Cell : 09425050136, 08821825087

Lt. Col. A.V.N. Sinha
Lucknow
Cell : 09598367090

Shri Dinesh Taneja
Barelly (UP)
Cell : 09412287735

Area Specific Tara Sadhak

Shri Kamal Didawania
Area Chandigarh, Haryana
Cell : 07821855756

Shri Ramesh Yogi
Area Lucknow (UP)
Cell : 09694979090

Shri Rameshwar Jat
Area Gurgaon, Faridabad
Cell : 07821855758

Shri Sanjay Choubisa
Shri Gopal Gadri
Area Delhi
Cell : 07821055717, 07821855741

Shri Bhanwar Devanda
Area Noida, Ghaziabad
Cell : 07821855750

Shri Vikas Chaurasia
Area Jaipur (Raj.)
Cell : 09983560006
09414473392

Donors Kindly NOTE

It you do not get any response from any of the above mentioned Mob. numbers, Kindly inform us at Mobile No. 09549399993 and / or 09649399993

INCOME TAX EXEMPTION ON DONATIONS

Donations to Tara Sansthan are TAX-EXEMPT under section 80G and 35 AC / 80GGA of I.T. Act. 1961 at the rate of 50% and 100%

Donation to Tara Sansthan may be sent by cheque/draft drawn in favor of Tara Sansthan, payable at Udaipur, OR may be remitted direct into any of the following Bank Accounts, with caopy of pay-in-slip and Donor's address to Tara Sansthan, Udaipur for expediting Donation Acknowledgment Receipt

Tara Sansthan Bank Account

ICICI Bank (Madhuban) A/c No. 004501021965	**IFS Code : icic0000045**	**HDFC A/c No. 12731450000426**	**IFS Code : hdfc0001273**
SBI A/c No. 31840870750	**IFS Code : sbin0011406**	**Canara Bank A/c No. 0169101056462**	**IFS Code : cnrb0000169**
IDBI Bank A/c No. 1166104000009645	**IFS Code : IBKL0001166**	**Central Bank of India A/c No. 3309973967**	**IFS Code : cbin0283505**
Axis Bank A/c No. 912010025408491	**IFS Code : utib0000097**		

For online donations - kindly visit - www.tarasansthan.org **Pan Card No. Tara - AABTT8858J**

TARA NETRALAYA

WZ-270, Village - Nawada, Opp. 720, Metro Pillar, Uttam Nagar, Delhi - 59
DELHI HOSPITAL - Tara Netralaya, +91 9560626661, 011-25357026

TARA NETRALAYA

Unit No. 1408/7, 1st Floor, Israni Indl. Estate, Penkarpara, Nr. Dahisar Check-post, Meera Road, Thane - 401107 (M.S.) INDIA
MUMBAI HOSPITAL - Tara Netralaya, Shankar Singh Rathore +91 8452835042, 022 - 28480001

तारांशु (हिन्दी - अंग्रेजी) मासिक समाचार पत्र, जून, 2015

RNI. No. - RAJBIL/2011/42978, Postal Reg. No. - RJ/UD/29-102/2015-2017, Dates of Posting - 11th to 18th each month at Shastri Circle, P.O., Udaipur,
'तारांशु' - स्वत्वाधिकारी, श्रीमती कल्पना गोयल द्वारा 240-ए, हिरण मगरी, सेक्टर - 6, उदयपुर (राज.) 313002 से प्रकाशित तथा मुद्रक श्री सत्यप्रकाश कुमार शर्मा द्वारा
सागर ऑफसेट प्रिन्टर, इण्डिया प्रा. लि. प्लॉट नं. 518, इकोटेच - III, उद्योग केन्द्र एक्टेंशन - II, ग्रेटर नोएडा, गौतम बुद्ध नगर (उत्तर प्रदेश) में मुद्रित, सम्पादक - श्रीमती कल्पना गोयल

तारा संस्थान के नि:शुल्क मानवीय सेवा प्रकल्प, आपसे प्रार्थित अपेक्षित सहयोग -सौजन्य राशि

नेत्र चिकित्सा सेवा (मोतियाबिन्द ऑपरेशन)

01 ऑपरेशन - 3000 रु., 03 ऑपरेशन - 9000 रु., 06 ऑपरेशन - 18000 रु., 09 ऑपरेशन - 27000 रु., 17 ऑपरेशन - 51000 रु.

नेत्र शिविर सौजन्य

मोतियाबिन्द जाँच-चयन-शिविर आयोजन एवं 30 ऑपरेशन सहयोग सौजन्य, प्रति शिविर - 151000 रु.
चश्मा जाँच - चश्मा वितरण - दवाई सहयोग राशि, प्रतिशिविर - 21000 रु.

तृप्ति योजना सेवा	गौरी योजना सेवा	आनन्द वृद्धाश्रम सेवा
(प्रति बुजुर्ग खाद्य सामग्री सहायता)	(प्रति विधवा महिला सहायता)	(प्रतिबुजुर्ग)
01 माह - 1500 रु.	01 माह - 1000 रु.	01 माह - 5000 रु.
06 माह - 9000 रु.	06 माह - 6000 रु.	06 माह - 30000 रु.
01 वर्ष - 18000 रु.	01 वर्ष - 12000 रु.	01 वर्ष - 60000 रु.

एक विधवा महिला के बच्चे की शिक्षा हेतु वार्षिक सहयोग - 12000 रु.

सहयोग राशि - आजीवन संरक्षक 21000 रु., अर्जित ब्याज से दानदाता के नाम से इच्छित दिनांक को प्रतिवर्ष 2 मोतियाबिन्द ऑपरेशन,
आजीवन सदस्य 11000 रु., अर्जित ब्याज से दानदाता के नाम से इच्छित दिनांक को प्रतिवर्ष 1 मोतियाबिन्द ऑपरेशन (संचितनिधि में)

दान पर आयकर में छूट : तारा संस्थान को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G व 35AC/ 80GGA के अन्तर्गत आयकर में 50% व 100% छूट योग्य मान्य है।

निवेदन : कृपया अपना दान - सहयोग नकद या 'तारा संस्थान, उदयपुर' के पक्ष में देय चैक/ड्राफ्ट द्वारा संस्थान के पते पर प्रेषित करने का कष्ट करें, अथवा : अपना दान सहयोग तारा संस्थान के निम्नांकित किसी बैंक खाते में जमा करवा कर 'पे-इन-स्लिप' अपने पते सहित संस्थान को प्रेषित करें ताकि दान - सहयोग प्राप्ति रसीद आपको तत्काल भेजी जा सके।

ICICI Bank (Madhuban) A/c No. 004501021965	IFS Code : icic0000045	HDFC A/c No. 12731450000426	IFS Code : hdfc0001273
SBI A/c No. 31840870750	IFS Code : sbin0011406	Canara Bank A/c No. 0169101056462	IFS Code : cnrb0000169
IDBI Bank A/c No. 1166104000009645	IFS Code : IBKL0001166	Central Bank of India A/c No. 3309973967	IFS Code : cbin0283505
Axis Bank A/c No. 912010025408491	IFS Code : utib0000097	Pan Card No. Tara - AABTT8858J	

'तारा' के सेवा प्रकल्पों का कृपया टी.वी. चैनल्स पर प्रसारण देखें :-

'पारस'	'आस्था भजन'	'आस्था'
रात्रि 8.40 से 9.00 बजे	प्रात: 8.40 से 9.00 बजे	रविवार दोपहर 2.30 बजे

बुक पोस्ट

Tara
बुजुर्गों के लिए...

तारा संस्थान

डीडवाणिया (रतनलाल) नि:शक्तजन सेवा सदन
236, सेक्टर - 6, हिरण मगरी, उदयपुर (राज.) 313002
मो. +91 9549399993, +91 9649399993

Email : info@tarasansthan.org, donation@tarasansthan.org
Website : www.tarasansthan.org